आई आई एम जम्मू में हिन्दी दिवस के कार्यक्रम का आयोज़न

१४ सितंबर, २०२१ (मंगलवार): 'हिन्दी हमारी पहचान, हमारा गर्व'। इस विषय पर भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू में १४ सितंबर, २०२१ को ७२वां हिन्दी दिवस का कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम का आरम्भ छात्रों द्वारा मधुर सरस्वती वंदना से हुआ। प्रोफ. मनोज कुमार, अध्यक्ष, एम. बी. ए., ने भी सभी उपस्थित लोगों से अनुरोध किया कि अपनी भाषा को ना भूले और कि बिना किसी संकोच के हिंदी भाषा का प्रयोग, सम्मान के साथ करें। डॉ. जाबिर अलि, अध्यक्ष, एम. बी. ए. प्लेसमेंट्स, ने बोला कि किसी व्यक्ति को हिन्दी संस्कृति को नहीं भूलना चाहिए एवं कि यह हमारा कर्त्तव्य है की हम हिन्दी भाषा को आगे बढ़ाए और जड़ों से दूर नहीं जाए। अन्य प्राध्यापकों ने भी समान भाव प्रकट किए।

कार्यक्रम में बीज वक्ता की भूमिका में सुश्री विजय शर्मा, लेखक, सिने -विशेषज्ञ, ने अपनी उपस्थिति से इस अवसर की शोभा बढ़ाई। उन्होंने अपने भाव व्यक्त करते हुए कहा की आज़ादी के ७५ वर्ष बाद भी हमको हिन्दी भाषा से सफलता नहीं मिलती हैं परन्तु उसको हमारे हिन्दी ना बोलने का कारण नहीं बनना चाहिए। इसके अतिरिक्त उन्होंने हिन्दी को सम्मान, स्वाभिमान और गर्व का प्रतीक होने के साथ-साथ, हमारी अस्मिता की पहचान भी बतायी। उन्होंने हिन्दी बातचीत तथा लेखन पर भी बल दिया।

मुख्य अतिथि, सुश्री सुनंदा बनर्जी, संस्थापक, को-इमर्ज, ने हिन्दी भाषा पर अपने विचार व्यक्त किये। उन्होंने दर्शकों को अपनी परंपरा से जुड़े रहने की सलाह दी। उन्होंने हिन्दी साहित्य एवं भारतीय कला की अहमियत पर प्रभाव दिया और कहा कि हमको इन में रूचि और मनोरंजन ढूंढना चाहिए। इसके अतिरिक्त उन्होंने अपने देश एवं भाषा पर गर्व करने का प्रोत्साहन दिया।

कार्यक्रम के अंतिम चरण में श्री. बी एस सहाय, निदेशक, आई आई एम जम्मू, ने अपने प्रेरणादायक भाषण में हिन्दी भाषा की महत्वता बताने के साथ-साथ हिन्दी भाषा को देश की संस्कृति और संस्कारों का प्रतिबिंब भी माना। उन्होंने भारत के प्रधानमंत्री, श्री. नरेंद्र मोदी जी को प्रेरणा स्रोत बताया और कहा कि जैसे वह हिन्दी भाषण देते है, उसी प्रकार छात्रों को भी अपने देश और भाषा के प्रति गर्व करना चाहिए। उन्होंने यह बात भी कही कि अपने विचार और मन को हिन्दी भाषा से अच्छी कोई और भाषा अभिव्यक्त नहीं कर सकती तो हिन्दी या अपनी मात्र भाषा में वार्तालाप करने में भी संकोच नहीं करना चाहिए। शब्दों का खूबसूरत उदाहरण देते हुए प्रोफ. सहाय ने कहा कि जैसे अक्षर एक दूसरे को सहयोग देते है, वैसे ही हमको भी समानता का पालन करना चाहिए। अंत में उन्होंने पूर्ण संस्थान से अनुरोध किया कि हिन्दी दिवस मात्र एक दिन का दिवस नहीं बल्कि इसको अपने दैनिक जीवन में ढालना चाहिए।

कार्यक्रम राष्ट्रगान एवं धन्यवाद प्रस्ताव के साथ समाप्त हुआ।